NIOS PYQ's SOLUTIONS

PREVIOUS YEARS' QUESTIONS & ANSWERS

APRIL-2025

Your Path to Success

खंड - अ

प्रश्न 1 - पचमढ़ी की पहाड़ियों में क्या पाए/पाई जाते/जाती हैं?

(A) मंदिर और किले

(B) प्राचीन पांडुलिपियाँ

(C) चित्रों वाले शैल आश्रय

(D) बौद्ध स्तूप

उत्तर - (C) चित्रों वाले शैल आश्रय

प्रश्न 2 – पाल लघु चित्रकला के प्रारंभिक उदाहरण किस बौद्ध ग्रंथ में मिलते हैं ?

(A) जातक कथाएँ

(B) अष्टसहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता

(C) विनयपिटक

(D) धम्मपद

उत्तर – (B) अष्टसहस्त्रिका प्रज्ञापारमिता

प्रश्न 3 – जब पलस्तर सेट होता है, तो नमी का क्या होता है ?

(A) यह तेल में बदल जाती है

(B) यह वाष्पित हो जाती है

(C) यह रंगद्रव्य में समा जाती है

(D) यह चित्र में बनी रहती है

उत्तर - (B) यह वाष्पित हो जाती है

प्रश्न 4 – अजंता चित्रों में आमतौर पर कौन-से विषय चित्रित किए गए हैं ?

(A) केवल शाही युद्ध

(B) बुद्ध से संबंधित दृश्य और प्रतीक

(C) पौराणिक युद्ध दृश्य

(D) अमूर्त और आधुनिक डिजाइन

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

उत्तर – (B) बुद्ध से संबंधित दृश्य और प्रतीक

प्रश्न 5 - 'भालू, बाघ और पक्षी' नामक कृति का माध्यम क्या है?

(A) भित्तिचित्र

(B) अँगूठे से छपाई

(C) ऐक्रेलिक ऑन कैनवास

(D) जलरंग

उत्तर - (B) अँगूठे से छपाई

प्रश्न 6 - मानव कितने वर्षों से चित्रकारी कर रहे हैं, जैसा कि शैल चित्रों से पता चलता है?

(A) 10000 वर्षों से अधिक

(B) 20000 वर्षों से अधिक

(C) 30000 वर्षों से अधिक

(D) 40000 वर्षों से अधिक

उत्तर – (C) 30000 वर्षों से अधिक

प्रश्न 7 - मधुबनी चित्रकला के प्रमुख पारंपरिक कलाकार कौन थे?

(A) पुरुष मूर्तिकार

(B) शाही दरबार के चित्रकार

(C) मिथिला क्षेत्र की महिलाएँ

(D) ब्रिटिश उपनिवेशी कलाकार

उत्तर – (C) मिथिला क्षेत्र की महिलाएँ

प्रश्न 8 - 'सीता विद लव-कुश' कालीघाट चित्रकला का केंद्रीय विषय क्या है?

A) रामायण का युद्ध दृश्य

(B) सीता और उनके पुत्रों के बीच प्रेम और स्नेह का क्षण

(C) भगवान राम का राज्याभिषेक

(D) रावण द्वारा सीता का अपहरण

उत्तर – (B) सीता और उनके पुत्रों के बीच प्रेम और स्नेह का क्षण

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

खंड - ख

प्रश्न 9 – गद्यांश को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अजंता गुफा चित्रकला

सबसे प्रसिद्ध चित्रकलाएँ अजंता गुफाओं में पाई जाती हैं। अजंता गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले के उत्तर-पूर्व में साठ मील की दूरी पर ताप्ती नदी की एक छोटी सहायक नदी, वाघोरा नदी के घुमावदार तट पर स्थित हैं। गुफाओं का नाम पास के गाँव अजिंठा के नाम पर रखा गया है। अजंता गुफाएँ लगभग 260 फीट ऊँची एक चट्टानी पहाड़ी पर फैली हुई हैं, जो 540 गज की लंबाई में इसके किनारों को काटकर बनाई गई हैं। यहाँ कुल तीस गुफाएँ हैं, जिनमें से एक अधूरी है। गुफाएँ 9, 10, 19, 26 और 29 चैत्य हॉल (पूजा स्थल) हैं। अन्य गुफाएँ विहार (मठ) के रूप में प्रयुक्त होती थीं, जहाँ भिक्षु रहते थे। अजंता गुफाओं की खोज 1819 में मद्रास रेजिमेंट के कुछ अधिकारियों द्वारा की गई थी। जिनमें से एक मेजर जॉन स्मिथ थे। अजंता गुफाओं पर पहली रिपोर्ट 1824 में लेफ्टिनेंट जे० ई० ई० ऐलेक्जेंड्रा द्वारा रॉयल एशियाटिक सोसाइटी को भेजी गई थी।

(a) अजंता गुफाएँ _____ नदी के घुमावदार तट पर स्थित हैं।

(b) वाघोरा नदी _____ नदी की एक छोटी सहायक नदी है।

(c) अजंता गुफाएँ महाराष्ट्र के _____ जिले में स्थित हैं।

(d) इन गुफाओं का नाम पास के गाँव _____ के नाम पर रखा गया है।

उत्तर –

(a) वाघोरा

(b) ताप्ती

(c) औरंगाबाद

(d) अजिंठा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 10 – गद्यांश को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

फ्रेस्को

फ्रेस्को भित्ति चित्रण की एक तकनीक है, जिसमें ताजे रखे हुए या गीले चूने के पलस्तर पर चित्र बनाए जाते हैं। इसमें रंगों के मिश्रण के लिए पानी या चूने के साथ मिले पानी का उपयोग किया जाता है ताकि रंगद्रव्य पलस्तर के साथ मिल जाए। जैसे ही पलस्तर सेट होता है, नमी वाष्पित हो जाती है और चित्र की सतह पर कैल्सियम कार्बोनेट की एक पतली परत बन जाती है, जो रंगों को संरक्षित करती है। फ्रेस्को उन्हीं सतहों पर बनाए जाते हैं, जो चूने से समृद्ध होती हैं और जहाँ रंगद्रव्य भी बाइंडर के रूप में चूने का उपयोग करते हैं, परिणामस्वरूप कलर पैलेट सीमित हो जाता है, क्योंकि रंगद्रव्य में मौजूद रसायन चूने में उपस्थित कैल्सियम के साथ प्रतिक्रिया करते हैं। इसलिए भारतीय चित्रकार फ्रेस्को के लिए रामराज, हिरमिच, हिंगुल, गेरू, नील, दीपक की कालिख या कोयले का चूरा और विभिन्न संयोजनों का इस्तेमाल करते थे। रंगद्रव्यों को मूसल में पीसकर, छानकर और पानी में मिलाकर तरल रूप में रखा जाता था। हिंगुल, सिंदूर आदि को भेड़ के दूध में पीसकर नींबू के रस से शुद्ध किया जाता था।

रिक्त स्थान भरिए :

(क) फ्रेस्को एक _____ तकनीक है जिसमें ताजे रखे हुए या गीले चूने के पलस्तर पर चित्र बनाए जाते हैं।

(ख) पानी का उपयोग किया जाता है ताकि _____ पलस्तर के साथ मिल जाए।

(ग) रंगद्रव्यों को मूसल में पीसकर, छानकर और पानी में मिलाकर _____ रूप में रखा जाता था।

(घ) _____ और _____ को भेड़ के दूध में पीसकर नींबू के रस से शुद्ध किया जाता था।

उत्तर –

(a) भित्ति चित्रण

(b) रंग

(c) तरल

(d) हिंगुल और सिंदूर

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

प्रश्न 11 – गद्यांश को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

वारली चित्रकला-पालघाट देवी चौक

पालघाट देवी चौक चित्रकला घर की मुख्य भीतरी दीवार पर विवाह-संबंधी अनुष्ठानों के लिए बनाई जाती है। एक बड़े आयताकार चौक के केंद्र में पालघाट देवी, जो वारली समुदाय की उर्वरता की देवी हैं, की आकृति चित्रित की जाती है। शीर्ष दो कोनों पर प्रतिनिधित्व करने वाले सूर्य और चंद्रमा की आकृतियाँ या बेसिंग पर दुल्हन और दुल्हे द्वारा पहने जाने वाले औपचारिक मुकुट को रंगा जाता है। देवी की आकृति के नीचे शुभ रंग अंकित किया जाता है। पुनः चौक शादी के दृश्यों और रोजमर्रा की गतिविधियों से घिरा हुआ होता है। इनमें घोड़ी पर सवार दुल्हा, नाचते हुए पुरुष और महिलाएँ, शिकार करना, खेती के दृश्य, ताड़ी, वनस्पतियाँ और जीवों के चित्रण आदि शामिल होते हैं। ये विवाहित महिलाओं द्वारा बनाए जाते हैं। उसके बाद उत्साही युवतियाँ बाकी दीवार का कार्य पूरा करती हैं और काल्पनिक दृश्यों का एक वास्तविक कोलाज बनाती हैं।

रिक्त स्थान भरिए :

(क) चौक का केंद्रीय चित्र _____, वारली उर्वरता देवी का है।

(ख) चौक एक _____ है, जो _____ का चित्रित हिस्सा है।

(ग) यह पालघाट देवी चौक चित्रकला _____ जनजातीय चित्रकला शैली का एक अभिन्न अंग है।

(घ) इस कला में मुख्य रूप से _____ का उपयोग होता है, जो _____ से बना होता है और इसे मृदा के आधार पर किया जाता है।

उत्तर –

(a) पालघाट देवी

(b) बड़ा आयत, विवाह-संबंधी अनुष्ठानों

(c) वारली

(d) सफेद रंग. चावल का आटा

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

SECTION - C

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (न्यूनतम 30 शब्दों में) :

प्रश्न 12- सिन्धु घाटी सभ्यता की मिट्टी के बर्तनों की डिजाइनों में पक्षी रूपांकन की क्या भूमिका थी?

उत्तर – पक्षी रूपांकनों का महत्व –

1. **सौंदर्य वृद्धि :** पक्षी रूपांकन मिट्टी के बर्तनों की दृश्य सुंदरता बढ़ाते थे। इन्हें अक्सर आकृतिक या ज्यामितीय रूपों में चित्रित किया जाता था, जिससे बर्तन विशिष्ट और आकर्षक बनते थे।

2. **सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व :** पक्षियों ने हड़प्पा लोगों की प्रकृति के प्रति गहरी समझ और उनके पर्यावरण (नदियाँ, जंगल, जीव-जंतु) के साथ संबंध प्रकट होता है।

प्रश्न 13- भारत में कंपनी चित्रकला का विकास कैसे हुआ? लिखिए।

उत्तर – कंपनी पेंटिंग भारत में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभाव में विकसित हुई। यह भारतीय पारंपरिक लघुचित्रकला और यूरोपीय तकनीकों जैसे जलरंग, परिप्रेक्ष्य और यथार्थवाद का मिश्रण थी। भारतीय कलाकारों ने अपने कौशल को ब्रिटिश संरक्षकों की रुचियों के अनुसार ढाला, जो संग्रहणीय चित्र, पोर्ट्रेट, प्राकृतिक दृश्य, पक्षी, पशु और रोजमर्रा के जीवन के दृश्य चाहते थे।

प्रश्न 14- जैन लघु चित्रकला की प्रमुख विशेषताओं को समझाइए।

उत्तर – जैन लघुचित्रकला का विकास मुख्यतः गुजरात में हुआ और इसे जैन समुदाय का संरक्षण प्राप्त हुआ। ये चित्र प्रायः ताड़ के पत्तों पर बनाए जाते थे, जिनका उपयोग पांडुलिपियों के लेखन में भी होता था। इस शैली में भित्तिचित्रकला और स्थानीय लोककला के तत्व दिखाई देते हैं। चित्रों का विषय मुख्यतः धार्मिक था, जिसमें तीर्थंकरों तथा जैन धार्मिक कथाओं का चित्रण किया गया।

Or / अथवा

मिर्जापुर शैल चित्रों में मुख्य रूप से कौन-कौन से विषय चित्रित किए गए हैं?

उत्तर – मिर्ज़ापुर की शैल चित्रकला में मुख्य रूप से मानव आकृतियाँ, पशु-पक्षी, शिकार के दृश्य, दैनिक जीवन की गतिविधियाँ, नृत्य, युद्ध तथा धार्मिक अनुष्ठानों का चित्रण मिलता है। ये चित्र प्राचीन मानव के सामाजिक जीवन, विश्वासों और सांस्कृतिक परंपराओं को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए (न्यूनतम 70 शब्दों में) :

प्रश्न 15- चंबा शैली में बनी 'विश्वरूपा ।' चित्रकला का कलात्मक और धार्मिक महत्त्व बताइए।

उत्तर – चंबा शैली में बनी 'विश्वरूपा ।' चित्रकला में भगवान विष्णु का विराट और ब्रह्मांडीय रूप दिखाया गया है, जो उनकी सर्वव्यापकता और असीम शक्ति का प्रतीक है। कलात्मक दृष्टि से इसमें संतुलित रचना, सटीक रेखाएँ, चमकीले रंग और सूक्ष्म विवरण मिलते हैं। धार्मिक रूप से यह दिव्य संरक्षण, ब्रह्मांडीय व्यवस्था और गहरी भक्ति का संदेश देती है, जो हिमालयी सौंदर्य और वैष्णव परंपरा का सुंदर संगम है।

Or / अथवा

कंपनी स्कूल की 'पालकी' चित्रकला की शैली और विषय-वस्तु का वर्णन कीजिए।

उत्तर – कंपनी स्कूल की पलनक्विन चित्रकला में शाही या पारंपरिक समारोहों में उपयोग होने वाले सजावटी पालकी को चित्रित किया गया है। कलात्मक दृष्टि से इसमें भारतीय लघुचित्रकला का विस्तार और यूरोपीय यथार्थवाद एवं परिप्रेक्ष्य दिखाई देता है। चित्र में चमकीले रंग, सटीक रेखाएँ और सूक्ष्म पैटर्न दिखाई देते हैं, जो पालकी, उसके आभूषण और सेवकों का विवरण दर्शाते हैं। विषय औपनिवेशिक भारत के सामाजिक जीवन और शाही संस्कृति का प्रतिनिधित्व करता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए (प्रत्येक न्यूनतम 90 शब्दों में) :

प्रश्न 16- 'नंद स्वरम्' में एम० एफ० हुसैन की शैली की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं, और यह उनकी कलात्मक दृष्टि को कैसे दर्शाती है?

उत्तर – एम.एफ. हुसैन, भारत के प्रमुख आधुनिक कलाकारों में से एक हैं, जो अपनी जीवंत, गतिशील और भावपूर्ण शैली के लिए प्रसिद्ध हैं। 'नंद स्वरम्' में एम० एफ० हुसैन की शैली की प्रमुख विशेषताएँ :

1. **साहसिक एवं प्रवाही रेखाएँ :** आकृतियों और रूपों की रेखाएँ गतिशीलता और जीवन का एहसास देती हैं।
2. **जीवंत और विरोधाभासी रंग :** चमकीले रंग चित्र को आकर्षक और लयात्मक बनाते हैं।
3. **शैलीगत आकृतियाँ :** मानव रूप यथार्थ से अधिक भाव और ऊर्जा पर केंद्रित हैं।
4. **शैलियों का मिश्रण :** लोक कला, पारंपरिक भारतीय चित्रकला और आधुनिक अमूर्त शैली का संयोजन।
5. **सांस्कृतिक विषय :** चित्र में भारतीय मिथक, संगीत और रोजमर्रा का जीवन दिखाई देता है।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Or / अथवा

बसोहली परंपरा के संदर्भ में 'कृष्ण विद ए कंपेनियन' चित्रकला में गहरे रंगों, शैलीबद्ध आकृतियों और जटिल विवरणों का उपयोग समझाइए।

उत्तर – बसोली शैली की चित्रकला 'कृष्ण विद अ कम्पेनियन' में बसोली परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। कलाकार ने साहसिक और जीवंत रंगों का उपयोग किया है, जैसे लाल, नीला और पीला, जिससे चित्र में नाटकीयता और जीवन्तता आती है। आकृतियाँ शैलीबद्ध हैं, जिनमें लंबी अंगुलियाँ और प्रभावशाली हाव-भाव दिखाई देते हैं, जो यथार्थ से अधिक भाव और कथा पर जोर देते हैं। सूक्ष्म विवरण कपड़ों, आभूषण और पृष्ठभूमि में दिखते हैं, जो कलात्मक कुशलता को दर्शाते हैं। ये सभी तत्व मिलकर भक्ति भाव, कथा स्पष्टता और ऊर्जावान सौंदर्य प्रस्तुत करते हैं, जो बसोली शैली की पहचान है।

प्रश्न 17- पहाड़ी चित्रकला की किन्हीं दो शैलियों के बारे में लिखिए। चित्रकला की शैलियों के विषयों और विशिष्ट विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर – पहाड़ी चित्रकला, हिमालयी राज्यों से विकसित, जीवंत रंगों, काव्यात्मक शैली और भक्ति या रोमांटिक विषयों के लिए प्रसिद्ध है। विभिन्न स्कूलों ने विशिष्ट क्षेत्रीय सौंदर्य विकसित किया।

1. बसोली शैली : पहाड़ी चित्रकला की एक प्राचीन शैली है, जिसका विकास जम्मू क्षेत्र के बसोहली में हुआ। यह शैली अपने गहरे रंगों, नाटकीय अभिव्यक्ति और शैलीबद्ध आकृतियों के लिए जानी जाती है।

(i) साहसिक और जीवंत रंग - जैसे लाल, नीला और पीला।

(ii) शैलीगत, भावपूर्ण आकृतियाँ - लंबी आँखों और गतिशील मुद्राओं के साथ।

(iii) सजावटी विवरणवस्त्र – वस्त्रों और आभूषणों में सूक्ष्म अलंकरण।

(iv) नाटकीय रचनाएँ -जो भावनात्मक प्रभाव देती हैं।

2. काँगड़ा शैली : काँगड़ा शैली पहाड़ी चित्रकला की एक प्रसिद्ध और विकसित शैली है, जिसका विकास हिमाचल प्रदेश के काँगड़ा क्षेत्र में हुआ। यह शैली अपनी कोमलता, सूक्ष्म रेखांकन और काव्यात्मक भावों के लिए जानी जाती है।

(i) **कोमल और हल्के रंग** – जैसे गुलाबी, हरा, नीला और पेस्टल टोन।
(ii) **प्राकृतिक और सौम्य आकृतियाँ** – कोमल चेहरे और भावपूर्ण मुद्राओं के साथ।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

(iii) **प्राकृतिक पृष्ठभूमि** – पहाड़, नदियाँ, वृक्ष और पुष्पों का सुंदर चित्रण।

(iv) **काव्यात्मक और रोमांटिक रचनाएँ** – जिनमें शांति, प्रेम और भक्ति का भाव व्यक्त होता है।

Or / अथवा

आधुनिक कला में किन्हीं दो समकालीन भारतीय कलाकारों के योगदान पर चर्चा कीजिए।

उत्तर – समकालीन भारतीय कलाकारों ने आधुनिक भारतीय कला को नया आयाम दिया है, जिसमें परंपरागत विषयों और आधुनिक तकनीकों का संयोजन दिखाई देता है, जो सांस्कृतिक विरासत और समकालीन दृष्टिकोण दोनों को प्रतिबिंबित करता है।

1. एम.एफ. हुसैन (1915–2011) : एम. एफ. हुसैन को "भारत का पिकासो" कहा जाता है। उन्होंने आधुनिक भारतीय कला को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई।

(i) भारतीय लोक कला, पारंपरिक विषयों और आधुनिक अमूर्त शैली का संयोजन।

(ii) चित्रों में भारतीय मिथक, संगीत, सिनेमा और दैनिक जीवन के दृश्य।

(iii) जीवंत रंगों और साहसिक, प्रवाही रेखाओं का प्रभावी प्रयोग।

2. एफ.एन. सौजा (1924–2002) : एफ. एन. सौजा आधुनिक भारतीय कला के सशक्त और निर्भीक कलाकार थे तथा प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट्स ग्रुप के संस्थापक सदस्य थे।

(i) स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय कला को आधुनिक और अभिव्यक्तिपूर्ण रूप दिया।

(ii) मानव भावनाओं, सामाजिक मुद्दों और यथार्थ का साहसिक चित्रण।

(iii) कोणीय, विकृत आकृतियाँ और तीव्र रंगों के माध्यम से आधुनिकतावादी दृष्टि।

All Rights Reserved © Manish Verma (MVS Foundation), for more Notes visit https://www.mvsfoundation.in/

Thank you!

We hope you found this material helpful. We wish you the very best for your examination.

Strive for Excellence – Your Path to Success